कलम की अनन्त दिशाएँ

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

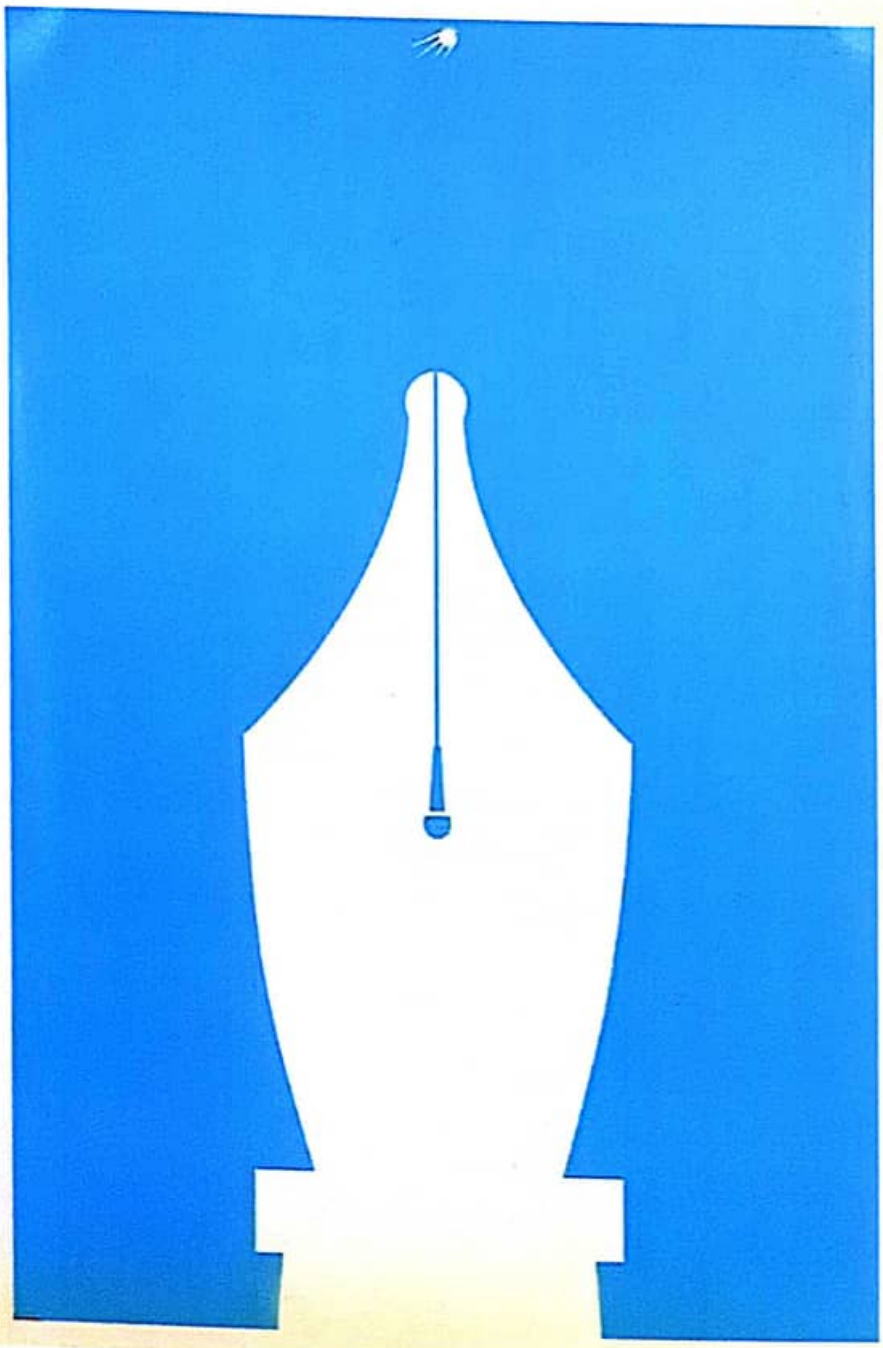

सम्पादक शुभेच्छुओं की प्रेरणास्पद अपेक्षा और मित्रों के आग्रह का परिणाम है यह पुस्तक। सम्पादकों की प्रेरणा से साहित्य और मानस सम्बन्धी कुछ लेख और कुछ मित्रों के संस्मरण लिखे। संस्मरण लिखते समय यह मन कहाँ-कहाँ की धरती नापकर सामने लाता है, आश्चर्य होता है। पचासों वर्ष पुराने प्रसंग तरोताजा हो जाते हैं। कई नये ग्रंथ समीक्षा लिखने को प्रेरित करते हैं। लिखने की शै में पुरानी फाइलें भी सामने आती हैं जिनकी खोजबीन में कई बिखरे मोती हाथ लग जाते हैं। कलम की अनन्त दिशायें खुल जाती हैं। इस संग्रह में इन्हीं सबका संकलन है जिन्हें कुछ निकट के कुछ दूर के शीर्षकों के अन्तर्गत संजोया गया है और नाम दिया है—'कलम की अनन्त दिशायें।' इनमें बहुत कुछ जानने योग्य है जो अन्यत्र उपलब्ध न होगा।

वस्तुतः यह पुस्तक डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया' द्वारा अलग-अलग समय पर लिखे गए लेखों के माध्यम से हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं, विमर्शों के दायरे में हुए एवं हो रहे सृजन का मूल्यांकन प्रस्तुत करने का एक सार्थक प्रयास है।

कलम की अनन्त दिशाएँ

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

अनामिका प्रकाशन
52 तुलारामबाग, प्रयागराज

पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, किसी भी माध्यम से प्रयोग नहीं किया जा सकता।

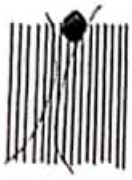

कलम की अनन्त दिशायें
© डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया' 2022

प्रकाशक

अनामिका प्रकाशन

52 तुलारामबाग, प्रयागराज-211006

फोन : 9415347186, 9264945248

e-mail : anamikabooks@gmail.com

vinodshukla185@gmail.com

मुद्रक

आर्मी प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ

टाईप सेटिंग एवं लेआउट

मानस कम्प्यूटर्स, प्रयागराज

मूल्य : रु0 750

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-90683-12-3

कहाँ क्या

संग्रह के सम्बन्ध में	7
तुलसीदास के राम-राज्य का अभिप्रेत	15
निर्दोष भरत का अपराध-बोध	19
मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला....	27
चित्रकूट महिमा अमित...	33
हिन्दी में हजारा काव्य-ग्रंथों की परम्परा	41
आल्हगाथा के रचयिता कवि	53
जगनिक और परमाल रासो	53
हिन्दी साहित्य हाशिये पर क्यों ?	72
कालिदास और बुन्देली लोकभाषा	82
वैदिक साहित्य का लोक व्यापीकरण	92
महत्वपूर्ण दुर्लभ ग्रंथ महादेव	95
परमानंद प्रधान की एक अज्ञात कृति	99
पद्माभरण प्रकाश	99
कवि बोधा सम्बन्धी कुछ नये तथ्य	104
श्रुतिलेख : प्रवीणराय की कहानी में नये रंग	107
इस हमाम में (भाषा को अमर्यादित करने वालों का कच्चा चिट्ठा)	116
हिन्दी काव्य परम्परा और गंगालहरी	121
मुमताज महल	128
हिन्दी कथा साहित्य में एक नया अक्स	128
सम्पादित कृति बीर बिलास	135
आल्हा गाथा सम्बन्धी कुछ नवीन महत्वपूर्ण तथ्य	137
बुन्देलखंड के उपन्यासकार : नयी खोज	140

मौलिक सृष्टि–सुषेण पर्व 142
राम–रस से परिपूर्ण गीत रामायण 145
जीवन यात्रा का पूरा दस्तावेज है आत्मकथा : अटकते–भटकते 147
चिन्तन का प्रामाणिक दस्तावेज : आँगन बुहारते वक्त 152
मधुकर साहित्यिक जनजागरण का अभिनव प्रयोग 156
कर्मवीर के सौ साल 165
दादूपंथी जगन्नाथदास कृत–गुणगंजनामा 171
जगन्नाथ सोनी महेश्वरी की परिचायक ग्रंथावली 176
श्री रामचरण जी महाराज का जीवन–चरित्र 181
करोना–रोना क्यों ? कुछ करो ना ! 185
मुझे लौटा दो मेरा वो गाँव 189

❑❑

संग्रह के सम्बन्ध में

मन बड़ा विचित्र है। बड़ा चंचल है। अविराम गतिशील है। विभिन्न भाव-स्थितियों में दौड़ता-भागता है। न चैन से बैठता है और न मन वाले को बैठने देता है। रोता हैं, गाता है, हँसता -हँसाता है। कभी सोता नहीं। सोने वाले के भीतर जाने कहाँ-कहाँ की दौड़ लगाता रहता है। कहते हैं व्यक्ति का मन वहीं तक की कल्पना करता है जहाँ तक व्यक्ति ने देखा, सुना या पढ़ा है लेकिन सुषुप्तावस्था में मन की छलांग अकल्पित दुनिया में भी विचरण करती है। कवियों-लेखकों ने इस मन को लेकर अनेक प्रकार की भावनाएँ व्यक्त की हैं। सूरदास की गोपियाँ तो बेमन (मन-विहीन) होकर दुखी हैं क्योंकि उनका मन तो कृष्ण चुराकर ले गये—'ऊधो! मन नाहीं दस-बीस।' तुलसीदास ने तो मन की मनमानी से व्यथित होकर पूरा ग्रंथ रच डाला। मन की चंचलता के कारण कभी पूर्ण नींद नहीं सो सके—'कबहूँ न नाथ नींद भरि सोयो।' पद्माकर ने तो आक्रोश में यहाँ तक लिख डाला कि यदि मुझे पता होता कि यह मन इतना स्वच्छन्द है तो मैं इसके हाथ-पाँव तोड़ डालता—'जो मैं ऐसे जानतो कि जैहे तू विषै के संग, ऐरे मन मेरे तेरे हाथ पाँव तोरतो।'

इस मन की मनमानी से कोई प्राणी मुक्त नहीं है। वैसे मन मनुष्य का साथी ही नहीं, उसके अस्तित्व का भी बोधक है। तभी तो मन 'एवं मनुष्याणां' कहा गया है। 'मनुष्य मन का दास है' यह कहावत भी शत-प्रतिशत सत्य है। मन मनुष्य को मन चाहे ढंग से नचाता है। इच्छा होती है कि विश्राम करें, पर मन कहता है जीवन में विश्राम कहाँ? चलते रहो क्योंकि 'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान रिपुः।' आलसी नहीं, कर्मी बनो। जीवन के पल-पल का उपयोग करो। मन, मस्तिष्क, मनोभाव, मनोकांक्षा आदि जुड़े होकर भी अलग हैं किन्तु सबकी लगाम मन के हाथ में है। वही जो चाहे सो कराता रहता है।

मार्च सन् 2020 में मैं एकाएक गंभीर रूप से बीमार पड़ा। आठ-दस दिन अचेतन अवस्था में अस्पताल में रहना पड़ा। घर आया तो इतना कमजोर था कि सामान्य होने में चार-पाँच माह लग गये। उसका कुछ प्रभाव अभी भी है। सोचा था अब लिखना-पढ़ना न होगा। विश्राम करूँगा, किन्तु स्वस्थ होते ही मन इधर-उधर

दौड़ने लगा। पत्र-पत्रिकायें पुस्तकें उलटने-पुलटने लगा। कुछ सम्पादक शुभेच्छुओं की प्रेरणास्पद अपेक्षा, कुछ मित्रों के आग्रह। धीरे-धीरे कलम उठाई। कलम उठी तो चल पड़ी। चलना उसके स्वभाव में है। सम्पादकों की प्रेरणा से साहित्य और मानस सम्बन्धी कुछ लेख लिखे। कुछ मित्रों के संस्मरण लिखे। संस्मरण लिखते समय यह मन कहाँ-कहाँ की धरती नापकर सामने लाता है, आश्चर्य होता है। पचासों वर्ष पुराने प्रसंग तरोताजा हो जाते हैं। कई नये ग्रंथ समीक्षा लिखने को प्रेरित करते हैं। लिखने की शै में पुरानी फाइलें भी सामने आती हैं जिनकी खोजबीन में कई बिखरे मोती हाथ लग जाते हैं। कलम की अनन्त दिशायें खुल जाती हैं।

इस संग्रह में इन्हीं सबका संकलन है जिन्हें कुछ निकट के कुछ दूर के शीर्षकों के अन्तर्गत संजोया गया है और नाम दिया है—'कलम की अनन्त दिशायें।' इनमें बहुत कुछ जानने योग्य है जो अन्यत्र उपलब्ध न होगा। तुलसीदास के रामराज्य का अभिप्रेत आज की दुनिया का दिशा-निर्देश करता है जिसकी अवधारणा हर मन को करनी चाहिए। भरत का अपराध-बोध लेख नये अर्थ को ध्वनित करता है जिसका मूल कारण मनोविज्ञान है। मोह ही सारी व्याधियों की जड़ है, यह भारतीय ज्ञान-ग्रंथों का सार है। चित्रकूट की महिमा तो अनर्वचनीय है ही।

हिन्दी में हजारा ग्रंथों को समृद्ध परम्परा रही है जिनको लोग भूल रहे हैं। उसे एक लेख में समेटने का प्रयास है। जानकारी की दृष्टि से उसकी महत्ता निर्विवाद है। आल्हा गाथा के रचयिता जगनिक और परमाल रासो संबंधी शोध पूर्ण तथ्य दिये गये हैं। आल्हा संबंधी अन्य दो लेख हैं। हिन्दी साहित्य को लेकर अनेक प्रश्न उठाये जाते हैं। उसके हाशिये पर जाने के कारणों की पड़ताल की गई है। महादेव संबंधी दुर्लभ ग्रंथ में भगवान शंकर के स्वरूपों और आयुधों को लेकर अनेक पौराणिक ग्रंथों का मंथन कर उनके आशयों को पहली बार स्पष्ट किया गया है। वैदिक साहित्य के लोकव्यापीकरण तथा बुन्देली की भाषा-शक्ति का भी लेखों में परिचय दिया गया है। कुछ समीक्षायें हैं जिनसे ग्रंथों का अन्तरंग परिचय मिलता है। 'मधुकर' और 'कर्मवीर' हिन्दी की प्रमुख पत्रिकायें रही हैं। उनके योगदान का भी संक्षिप्त परिचय है। इनके अतिरिक्त पहली बार तीन राजस्थानी संतों पर भी लेख हैं। कुल मिलाकर संग्रह में तीस लेख हैं जिनमें से कुछ का यहाँ उल्लेख किया गया है।

सारे लेख नये नहीं है। कुछ पुराने भी हैं किन्तु पुस्तक के रूप में उन्हें पहली बार स्थान मिल रहा है। मेरा दावा है कि जानकारी की दृष्टि से लेख महत्वपूर्ण हैं। कुछ लेख और समीक्षायें पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। उन पत्रिकाओं के सम्पादकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ और उन शुभेच्छुओं को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इनके प्रकाशन के लिए प्रेरित किया।

86 वर्ष की अवस्था में अस्वस्थता के कारण दौड़ धूप कर पाना संभव नहीं। घर के बाहर जा नहीं पाता। ऐसे में इस संग्रह के प्रकाशन में सारी व्यवस्था मेरे सुपुत्र अभिलाष ने किया है। साहित्य में उसकी भी अभिरुचि है। धर्म पत्नी और बहू सौ. रचना मेरी सेवा-सुविधा में लगी रहती हैं तभी लिखना-पढ़ना हो पाता है। उन सभी के प्रति धन्यवाद और शुभकामना।

अंत में अनामिका प्रकाशन के श्री विनोद कुमार शुक्ल को भी धन्यवाद जिन्होंने इसके प्रकाशन में सुरुचि से काम लिया।

शिवरात्रि महापर्व

सन् 2022

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

मो. 9425376413

हिन्दी में हजारा ग्रंथों को समृद्ध परम्परा रही है, जिनको लोग भूल रहे हैं, उसे एक लेख में समेटने का प्रयास है। जानकारी की दृष्टि से उसकी महत्ता निर्विवाद है। आल्हा गाथा के रचयिता जगनिक और परमाल रासो सम्बन्धी शोधपूर्ण तथ्य दिये गये हैं। आल्हा सम्बन्धी अन्य दो लेख हैं। हिन्दी साहित्य को लेकर अनेक प्रश्न उठाये जाते हैं। उसके हाशिये पर जाने के कारणों की पड़ताल की गई है। महादेव सम्बन्धी दुर्लभ ग्रंथ में भगवान शंकर के स्वरूपों और आयुधों को लेकर अनेक पौराणिक ग्रंथों का मंथन कर उनके आशयों को पहली बार स्पष्ट किया गया है। वैदिक साहित्य के लोकव्यापीकरण तथा बुन्देली की भाषा-शक्ति का भी लेखों में परिचय दिया गया है। कुछ समीक्षायें हैं जिनसे ग्रंथों का अन्तरंग परिचय मिलता है। 'मधुकर' और 'कर्मवीर' हिन्दी की प्रमुख पत्रिकायें रही हैं। उनके योगदान का भी संक्षिप्त परिचय है। इनके अतिरिक्त पहली बार तीन राजस्थानी संतों पर भी लेख हैं।

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

जन्म : भाँरी (जिला बाँदा-अब चित्रकूट, उ.प्र.) 06 फरवरी 1937 को।

सेवा : म.प्र. के महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य रहे। (स्नातकोत्तर प्राचार्य पद से 31-12-96 को सेवानिवृत्त।)

योग्यता : एम.ए. (हिन्दी), पी-एच.डी. जबलपुर विश्वविद्यालय से सन् 1964 में। विषय : हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबन्ध और निबन्धकार

प्रकाशन : विभिन्न विधाओं में अब तक 37 पुस्तकें प्रकाशित। लगभग 200 शोधपरक निबन्धों का देश की प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशन तथा अनेक ग्रन्थों का संकलन। समय-समय पर अनेक शोध पत्रिकाओं, स्मारिकाओं व ग्रन्थों का सम्पादन। 12 शोध छात्रों को निर्देशन में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त। लगभग 20 शोध प्रबन्ध निर्देशन में प्रस्तुत।

सम्पादन : 'नव ज्योति', 'राष्ट्रगौरव', 'संज्ञा', व 'बन्धु' पत्रिकाओं का सम्पादन।

सम्मान-पुरस्कार-अलंकार

महामहिम उप राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन की 'साहित्य श्री' उपाधि तथा सम्मेलन द्वारा सर्वोच्च राष्ट्रीय अलंकरण 'भारत भाषा भूषण एवं सरस्वती सम्मान', म.प्र. लेखक संघ भोपाल का डॉ. सन्तोष तिवारी समीक्षा सम्मान 2005, कादम्बिनी क्लब-जबलपुर म.प्र. द्वारा अखिल भारतीय 'सेठ गोविन्ददास पुरस्कार', अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन-प्रयाग द्वारा 'साहित्य वारिधि' अलंकार, वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद-टीकमगढ़ द्वारा 'बुन्देल वारिधि' सम्मान, बुन्देली विकास संस्थान-बसारी म.प्र. द्वारा राव साहब बुन्देला सम्मान, रामायणम ट्रस्ट-अयोध्या, उ.प्र. द्वारा पं. रामकिंकर सम्मान, ओरछा महोत्सव व केशव जयन्ती समारोह समिति द्वारा 'मित्र मिश्र अलंकरण' एवं पुरस्कार।

वर्तमान पता- एचआईजी, 124, भरहुत नगर, सतना (म.प्र.) 485004
संपर्क : 8602007400, 9425376413

आवरण सज्जा
मानस क्रियेसंस

अ अनामिका प्रकाशन
1981 से 2022 साहित्य के 42 वर्ष

आलोचना

9 789390 683505